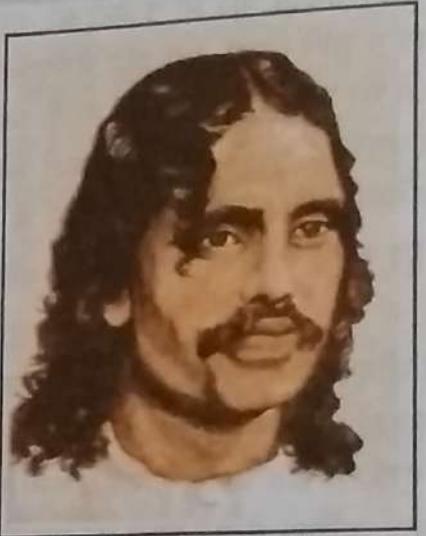


एक अद्भुत अपूर्व स्वप्न

—भारतेन्दु हरिश्चन्द्र



1. आज रात्रि को पर्यंक पर जाते ही अचानक आँख लग गई। सोते में सोचता क्या हूँ कि इस चलायमान शरीर का रुठिकाना नहीं। इस संसार में नाम स्थिर रखने की कोई युक्ति निकल आवे तो अच्छा है, क्योंकि यहाँ की रीति देख मुझे न विश्वास होता है कि इस चपल जीवन का क्षण-भर का भरोसा नहीं। ऐसा कहा भी है—

स्वॉस स्वॉस पर हरि भजो वृथा स्वॉस मत खोया।
न जाने या स्वॉस को आवन होय न होय

देखो समय सागर में एक दिन सब संसार अवश्य मग्न हो जायेगा। कालवश शशि सूर्य भी नष्ट हो जायेंगे। आकाश तारे भी कुछ काल पीछे दृष्टि न आवेंगे। केवल कीर्ति-कमल संसार-सरोवर में रहे वा न रहे, और सब तो एक तप ले रहे बूँद हुए बैठे हैं।

(पृष्ठ स. 3)

शब्दार्थ—पर्यंक = पलंग। **आँख लग जाना** = नींद आ जाना। **चलायमान** = नाशवान। **युक्ति** = उपाय। **चाल** = चंचल। **भरोसा** = विश्वास। **वृथा** = बेकार। **मग्न** = विलीन। **कालवश** = समय के प्रभाव से। **कीर्ति** = यश। **तप ले रहे** **बूँद** = क्षणभंगुर, गर्म तवे पर पड़ी पानी की बूँद।

सन्दर्भ तथा प्रसंग—प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक के 'एक अद्भुत अपूर्व स्वप्न' शीर्षक पाठ से लिया गया है। इसके लेखक भारतेन्दु हरिश्चन्द्र हैं। लेखक ने एक रात एक विचित्र सपना देखा कि कोई काम करना चाहिए क्योंकि सभी में सब कुछ नश्वर है और जीवन भी स्थायी नहीं है।

व्याख्या—लेखक कहता है कि एक रात वह जैसे ही पलंग पर आकर लेटा, उसे नींद आ गई। नींद की दशा में उसने विचार किया कि संसार में जीवन स्थायी नहीं है। वह कभी भी नष्ट हो सकता है। मरने के बाद भी लोग उसे शह रहे इसका कोई उपाय पता चल जाय तो अच्छा है। संसार के तौर-तरीके देखकर लेखक को पवका विश्वास हो गया है कि जो चंचल और अस्थिर है। उसके स्थायित्व का एक क्षण भी विश्वास नहीं किया जा सकता। किसी कवि का यह कथन सब कहता है कि हर बार श्वास लेते समय ईश्वर का स्मरण करना चाहिए। एक भी श्वास बेकार नहीं जाने देनी चाहिए। यह नहीं कि एक श्वास आने के पश्चात टप्पी प्लांट—

